धारणा स्वरूप की परसेन्टेज़ बढ़ाओ तब समय का सामना कर सकेंगे

आज जब मैं बापदादा के पास पहुँची तो बापदादा ने मीठा मुस्कराते मिलन मनाया और पूछा - बच्ची, आज क्या समाचार लाई हो ? मैंने कहा - बाबा आज दोनों दादियों की तरफ से बहुत प्यार और समाचार लाई हूँ। दोनों दादियों ने, सर्व दादियों के, बड़े भाईयों और सर्व ब्राह्मणों के तरफ से बहुत-बहुत यादप्यार और थैंक्स दी है कि आपने इस सीज़न के पानी की समस्या को सहज ही पार कराए सम्पन्न कर दिया। बापदादा बहुत ही मीठे स्वरूप से मुस्कराये और बोले, बापदादा चारों ओर सभी देश-विदेश के बच्चों को पदमगुणा थैंक्स देते हैं कि सबने अथक सेवा में उमंग- उत्साह से सहयोग दिया है। मधुबन के, शान्तिवन के, ज्ञानसरोवर के बच्चों ने अच्छा पार्ट बजाया और आने वाले नये-नये बच्चों ने भी अच्छी हिम्मत रखी जो हलचल के समाचार भिन्न-भिन्न सुनते भी पहुँच गये। फारेनर्स भी अच्छे निर्भय उत्साह वाले निकले और सोच लिया कि मधुबन जाना ही है, ऐसे हिम्मत उमंग वालों को बाप की और समय की मदद मिलती ही है।

ऐसे कहते ही बापदादा के नयनों में बच्चों के स्नेह के मोती चमक रहे थे। कुछ समय तो बाबा के सामने बच्चे ही इमर्ज थे फिर मैंने कहा – बाबा, दादी जानकी ने डबल फारेनर्स की आर.सी.ओ. मीटिंग का समाचार भेजा है। सबने बहुत अच्छे प्लान बनाये हैं। बाबा बोले – बच्चों ने अच्छा सोचा है कि की हुई सेवा की पीठ कैसे करें क्योंकि यह बहुत ज़रूरी है। अनेक बच्चों का समय, एनर्जी और मनी लगती है तो आगे रिजल्ट को बढ़ाना ही ठीक है। जिन आत्माओं को सम्पर्क में लाया है उनको और आगे बाप के प्यार में लाना, सेवा में समीप लाना, सहयोगी बनाना, फैमिली मेम्बर के सम्बन्ध का अनुभव कराना यह भविष्य प्लान ज़रूरी है। यह जो तीनों प्रोजेक्ट – काल आफ टाइम, कल्चर आफ पीस या लीविंग वैल्यू की उठाई है, उनके अलग-अलग तरीके की रिज़ल्ट और सम्पर्क बढ़ाने का साधन अच्छा है इसलिए उनको बढ़ाना ही है। इस बारी जो अपने संस्कार परिवर्तन पर ध्यान दे रूह-रूहान की है वा आगे भी प्लान बनाया है, यह भी ज़रूरी है क्योंकि समय की समीपता प्रमाण अभी फारेन के बच्चों को जो आर.सी.ओ वा एन.सी.ओ ग्रुप की निमित्त आत्मायें हैं उन्हों को विशेष यह ध्यान रहे कि जैसे निमित्त दादियों से रूहानियत का अनुभव होता है और दादियाँ भी समझती हैं कि हमें अपने द्वारा रूहानियत और बाप के सम्बन्ध का अनुभव और आगे बढ़ाने में सहयोग की भासना देनी है। ऐसे इस ग्रुप को भी ऐसे नहीं समझना है कि यह तो दादियों का ही काम है, हम तो माईक हैं, दादियाँ माइट साथ में है, हम तो साथी हैं लेकिन अच्छे साथी सदा समान होते हैं। फ़ालो करते हैं। जैसे बाप समान बनने का लक्ष्य अच्छा है, ऐसे सेवा बढ़ाने, वारिस बनाने, सहयोगी बनाने में अपने में रूहानी भासना देने में भी आगे बढ़ाना है क्योंकि हर अलग-अलग दूर दूर के स्थान पर तो आप ही साकार में सामने एक्जाम्पुल निमित्त हो। अब तक सेवा में उमंग-उत्साह और प्रोग्रेस अच्छी कर रहे हैं। उसके लिए बापदादा खुश है और मुबारक दे रहे हैं। अब स्व-मान, स्व-स्थिति, स्व-उन्नति, सम्मान इस धारणा स्वरूपों में परसेन्टेज बढ़ानी है। वर्तमान समय प्रमाण इसकी बहुत आवश्यकता है तब समय का सामना कर सकेंगे और सेवा में सहज सफलता, निर्विघ्न स्थिति में उन्नति कर सकेंगे।

ऐसे कहते बापदादा ने कहा – यह अटेन्शन भारत की टीचर्स को भी ज़रूरी है, हमने कहा बाबा दादी ने होने वाली मीटिंग के लिए भी सन्देश दिया है। दादियों को तो यही उमंग है बस, सब अभी-अभी परिवर्तन हो जाये। बाबा मुस्कराये और कहा कि दादियों का उमंग भी पूरा होना ही है। फिर भारत के मीटिंग का सन्देश आगे देंगे, फिर तो बाबा ने दोनों ग्रुप के बच्चों को इमर्ज कर बहुत-बहुत सिक व प्रेम से दृष्टि में समा दिया और बड़े स्नेह के शब्दों से बाबा बोले - बच्चे, बाप की आशा को अवश्य पूर्ण करेंगे। बच्चे नहीं करेंगे तो कौन करेगा। मेरे हर कल्प के अधिकारी बच्चे हैं, बाप को तो नशा है वाह! मेरे बच्चे वाह! ऐसे कहते हमें भी बाहों में समाये विदाई दी। और साथ में सर्व डबल विदेशी बच्चों को भी यादप्यार दिया। ओम् शान्ति।